मा.श्री भंवरलाल जैन
१९३७ –२०१६
त्रिमासिक स्मरणांजली

आंसुओंकी आवाज नहीं होती...

आदमी बड़ा होता है और ऊँचे वृक्षसा बढता चला जाता है, लेकिन जैसे कभी कभी आंधी में कोई पुराना (सीनीयर) घटादार वृक्ष, किसी वजहसे थोडा सा झुक जाता है, कोई भव्य इमारत भूकंप की वजहसे जमीनदोस्त तो नहीं होती, लेकिन उसकी दीवारों मे दरारे पड़ जाती हैं, उसी प्रकार आखरी दिनों में आदरणीय मोटाभाऊ का स्वास्थ्य गिरने की वजहसे उन्हे शुरु में दस दिन तक तकलीफ उठानी पड़ी। उन्हे जसलोक हॉस्पिटलमें भर्ती करवाया गया। स्पेशीआलीस्ट डॉक्टर्स, टेकनीशीयन्सके अथक प्रयास एवम् उनके स्वास्थ्य के लिए की गई प्रार्थनाओंके बावजूद भी आखीर कुदरत के आगे किसीकी कुछ नहीं चली और आदरणीय श्री मोटाभाऊ हम सबको छोड़कर चले गए।

Last Meeting with My Family on Date 12-12-2015

मृत्यु की महिमा अपरंपार है। जन्म से पूर्व जीवनको रोका जा सकता है, लेकिन मौत को रोक पाना असंभव है। अंतघडी आने पर दुनिया के किसी भी डॉक्टर की, चाहे वह कितना ही होशियार क्यों न हों, कुछ नहीं चलती। अगर डॉक्टर में यह क्षमता होती तो डॉक्टर और उनके रिश्तेदारों की मृत्यु कभी नहीं होती। डॉक्टर बिमारी की अवधि बढा सकता है लेकिन आयुको बढाना उसके बसकी बात नहीं होती, यह निर्विवाद है। मृत्यु अटल है, ईश्वरेच्छा ही बलवान होती है।

बहुत कम लोग ऐसे होते हैं, जिन्हे पतझड स्पर्श नहीं कर पाता। बसंत केवल प्रकृति में ही पल्लवित हो ऐसा नहीं होता, व्यक्ति अगर सचमुच स्थितप्रज्ञताकी अवस्थाको प्राप्त कर ले तो उसे पतझड़ का स्पर्श नहीं होता।

जैन इरीगेशन के संस्थापक आदरणीय श्री मोटाभाऊ के समग्र जीवन के बारे में अगर सोचा जाय तो यह बात समझमें आती है कि उनकी यह विशेषता थी कि उनके जीवन में पतझडका कोई स्थान नहीं था। मूभतः राजस्थान के और वाकोद के वतनी श्री भाऊ की कर्मभूमि थी महाराष्ट्र। श्री भाऊने ७८ साल की उमर में हमसे बिदा ली। लगभग सात दशकों तक वे महाराष्ट्र में, अपनी कर्मभूमिमें कार्यरत रहे और अपने आपको स्थापित किया। सात दशकों का उनका जीवन मानों एक तपस्या की तरह था, कई अग्नि परीक्षाओंसे गुजरा हुआ, तप्त एवम् शुद्ध।

उनका व्यक्तित्व किसी जलधारा की तरह था, कहीं भी तुरन्त घुलमिल जानेवाला। वे कहीं रुके हों, या तो अटक गये हों ऐसा कभी नहीं हुआ। उनका केवल होना ही काफी हुआ करता था। कुछ व्यक्तित्व ही ऐसे होते हैं कि अगर वे उपस्थित न भी हों तो भी उनके अस्तित्व की सुगंध दूर दूर तक महकती रहती है। आदरणीय भाऊ आज हमारे बीच नहीं है लेकिन फिर भी उनकी अनुभूति होती रहती है, उनकी अनुपस्थितिमें भी खालीपन महसूस नहीं होता।

आदरणीय भाऊ के जाने से कर्मठ जीवन का मानो एक पर्याय लुप्त हो गया है। भाऊ के जाने से कालातीत जीवनशैली का, जिसे कालस्पर्श नहीं कर सकता ऐसी जीवनशैली का एक युग अस्त हो गया है। दुनिया की नजर से परे रहकर भी वे किसी प्रज्वलित दीप सा जीवन जीकर, अपनी अंतिम सांस तक सबको प्रकाश प्रदान करते रहे।

७८ सालकी उमर में भी वे युवकों को प्रोत्साहन देते थे। स्वयं से काम लेने की उनकी क्षमता, उन्हे नजदीक से जाननेवालों को प्रोत्साहित करती रहती थी, ऐसा मेरा अनुभव है।

एक कर्मठ व्यक्तित्व आज खो गया है, लेकिन उनके कर्म दीपक प्रकाश हमें भाऊ के ड्रीम डेस्टीनेशन रहे जैन इरीगेशन परिवार को सुपर पावर बनाने के लिए हमेशा मार्गदर्शन करता रहेगा।

सूरज कभी अपनी बड़ाई नहीं हांकता, लेकिन उसका आगमन होते ही पंछी विहार करने लगते हैं, विश्व का व्यवहार शुरु हो जाता है। सूरज का केवल अस्तित्व होता है, और उसका यह होना ही काफी होता है।

उन्होंने भौतिक सफलताको कभी अपना लक्ष्य नहीं माना। ज्ञान एवम् पुरुषार्थ से गरीबी का सामना किया जा सकता है, ऐसा उनका मानना था। उन्होंने अपने क्षितिज को विस्तारित किया था। वे हमेशा कहते थे कि गरीबी वास्तवतावादी होती है। गरीबी कभी भ्रम को बढावा नहीं देती। वास्तविकता या परिस्थिति के सामने हार मानना उनके स्वभाव में नहीं था।

हर महान जीवन किसी प्रीझम सा होता है, उससे निकलने वाली प्रकाश किरणें हमें मार्गदर्शन करती रहती हैं। उनका आदर्शवाद व्यवहारु था, क्यों कि वे हकीकत की भूमी पर पैर जमाकर खड़े थे।

उनका चरित्र, समर्पण एवम् प्रेरकदृष्टि हमेशा से उज्जवल रही है। अहंकार उन्हें छू नहीं पाया था। उनमें चिंताकर्षक बात यह थी कि उनमें बच्चों सी प्रमाणिकता, युवकोंसी ऊर्जा एवम् वयस्कों की परिपक्वता का मिश्रण था।

उनके व्यक्तित्व में हमारी संस्कृतिके तीन मूल्य समाविष्ट थे, संयम, दान एवम् दया (अनुकंपा)। श्री मोटाभाऊ का समग्र व्यक्तित्व साहस की तेजस्विता से कार्यरत था।

वे हमेशा पेडों को कविता एवम् जल, हवा और सूरज को ऊर्जा का स्त्रोत मानते थे। हम अपने स्वार्थ के लिए पर्यावरण को नष्ट कर रहे हैं ऐसा उनका मानना था।

दृढता, क्षमता एवम् परस्पर हिंमत से व्यक्ति अपने जीवन को आकार दे सकता है, इस बात को उन्होंने अपने कार्य के द्वारा सिद्ध कर दिखाया था। उनका कार्य उनके शरीर के साथ नष्ट नहीं हुआ है और ना ही होगा।

वे अपने विचारों के माध्यम से समाज और जैन इरीगेशन को एक नए मार्ग पर ले जाने के लिए क्रांति का आवाहन करते थे। एक ओर से अपनी कल्पना के नए आकाश का निर्माण किया करते थे तो दूसरी और परमार्थ, प्रवृत्ति का जीवनलक्ष इंन्द्रधनुष्य भी साकारित किया करते थे । सेवा, स्नेह, सद्‌गुण एवम् मानवता के माध्यम से सभी को बांधे रखने के लिए वे हमेशा प्रयत्नशील रहा करते थे।

आदरणीय श्री भाऊने अपने करुणामय, कर्मनिष्ठ एवम् आध्यात्मिक जीवन यात्रा में, चंदन के सुगंध सी समाजसेवा की और जैन इरीगेशन का विकास भी साधा। उनका मिलनसार स्वभाव, दृढ मनोबल एवम् उनके द्वारा किया गया कार्य हमें दीपस्तंभी की तरह हमेशा मार्गदर्शन करता रहेगा।

उनका विशाल व्यक्तित्व, उससे अधिक विशाल उनका दिल और उसी दिलसे अविरत बहती सेवा एवम् राष्ट्र और समाज के प्रति उनकी निष्ठा, आगामी कई पिढीओ तक पूरे देश, समाज और जैन इरीगेशन परिवार को मार्गदर्शन करती रहेगी।

किसी बरगद वृक्ष सा वात्सल्यपूर्ण उनका व्यक्तित्व, सरलता एवम् समझदारीपूर्ण प्रतिभा आज भी दिलमें वैसी की वैसी ही बसी हुई है. उनकी । प्रदीर्ध कारकिर्दी किसी दंतकथा सी लगती है।

देखते ही देखते तीन माह बीत गए, लेकिन फिर भी आदरणीय मोटाभाऊ का स्मरण एवम् कल्पनाका समन्वय नहीं हो पा रहा है, क्योंकि उनके स्वभाव में ही आत्मीयता एवम् प्यार भरा स्पर्श हुआ करता था। जन्म से लेकर मृत्यु तक का उनका जीवन मानों संबंधों का एक सरोवर जैसा था।

जैन इरीगेशन के हजारों कर्मचारीओं को उनका मुझसे अधिक नजदीकी परिचय रहा होगा, उनके साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होगा। आदरणीय मोटाभाऊ से मेरा संबंध वैसे तो कम समय का रहा, लेकिन फिर भी मैंने उस रिश्ते की नजदीकी एवम् गहराई को अनुभव किया है, कई घटनाओं के माध्यम से इसकी अनुभूति होती रही है। मेरे परिवार से वे साल में एक बार जरुर मिलते थे। उस समय विविध विषयों पर चर्चा होती रहती थी, उनका वात्सल्यसभर प्यार एवम् मार्गदर्शन भी प्राप्त होता था। आज भी आदरणीय मोटाभाऊ की स्मृति-सरिता में स्नान कर के मन पावन हो जाता है।

जीवन में कई बार महान व्यक्तिओं का वियोग सह पाना मुश्किल हो जाता है। ऐसे स्वजन जब हमेशा के लिए बिछड़ जाते है तो उसकी पीड़ा क्या होती है यह तो कोई अनुभवी ही समझ सकता है।

मृत्यु अटल है यह जानते हुए भी स्वजनों के वात्सल्य की कमी कैसे पूरी हो सकती है। हे भगवान, सर्जन-विसर्जन के तुम्हारे इस खेल को समझ पाना मुश्किल है। स्वयं अपने ही पदचिन्हों को तुम क्यो मिटा देते हो?

जिसका उदय होता है उसका अस्त भी निश्चित है, और जो खिलता है उसका मुरझाना भी निश्चित है इस सनातन सत्य के आधार पर सिर्फ इतना कहा जा सकता है कि सर्वशक्तिमान परमात्मा उनकी आत्माओ चिरशांति प्रदान करें एवम् मृत्यु के असूर्य लोक से हमें और जैन इरीगेशन परिवार के सदस्यों को बाहर निकालकर हमे शाश्वत जीवन की ओर देखने की दृष्टि प्रदान करे, जहां किसी भी प्रकार का विच्छेद, विनाश नही होता, उसका दर्शन करने की शक्ति, प्रकाश एवम् प्रज्ञा प्रदान करे, यही प्रार्थना...

मृत्यु केवल देह की होती है, आत्मा की नहीं, और इसलिए ईश्वर के चरणों में सिर्फ यही प्रार्थना है कि हे ईश्वर ! एक सुंदर एवम् पवित्र आत्मा तुम्हारे पास आई है, उसे उचित स्थान प्रदान करना तुमने हमे रुलाया है, इसकी कोई शिकायत नहीं लेकिन रोने के लिए आंसु तो देना...

आत्मीय पू.श्री मोटाभाऊ

Piller of Strength and Fountain of Wisdom For JISL.

चले गये है आज दूर आप हमसे, हमारे मन में जल रहा है दिया आप के संदेश का
आप फीर से लौट आये बीच हमारे, यही हमारी पूजा की आराधना
आप के कर्मोका आदर्श बना के हम, पूरा करेंगे वो जो अधुरा रहा,
शक्ति बढाकर आप हमारी, मंझिल तक राह का दिया बनेंगे,
आप से पाया है हमने जीने का मतलब, मतलब वो सबको समझायेंगे,
आशा बनके निराशा से लडेंगे, धर्म बनायेंगे आपके कर्मो को
श्रद्धांजली कुछ और क्या दे हम, बस आप के कर्मो के दिये को बुझने न देंगे।
वादा करते है हम आपसे आपके आदर्शो का दिल एक बनायेंगे।.

दीपक गोर परिवार
भावनगर डेपो
जैन इरीगेशन सिस्टम्स ली.